खादी और ग्रामीण पुनर्निर्माण: गांधीवादी दृष्टिकोण

–डॉ. रवीन्द्र कुमार

"खादी एक ओर दीन जन के सम्मान के साथ रोजगार जुटाने का अच्छा साधन है, तो दूसरी ओर यह अहिंसक साधनों द्वारा स्वराज्य–प्राप्ति का अतिरिक्त तथा अति मूल्यवान मार्ग भी है।"

–महात्मा गांधी

9 सितंबर, 1946 को हरिजन में प्रकट महात्मा गांधी के उक्त विचार खादी और उसके मूल में रहने वाले दर्शन की महत्ता को सामने लाते हैं। साथ ही, खादी दर्शन के माध्यम से एक बड़ी सीमा तक ग्रामीण पुनरुद्धार की उनकी परिकल्पना को, वृहद् अर्थों में हिंदुस्तान के पुनर्निर्माण–आत्मनिर्भरता, विकास और समृद्धि की रूपरेखा को प्रस्तुत करते हैं।

एक अन्य अवसर पर महात्मा गांधी द्वारा व्यक्त विचार हजारों वर्षों से एकता की प्रतीक व माध्यम रही हस्तनिर्मित खादी –इसके मूल में रहने वाले दर्शन द्वारा भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना में इसकी भूमिका को प्रकट करते हैं। इसके माध्यम से कोई भी सहजता के साथ खादी–दर्शन से जुड़े मानव एकता के पहलू को भी समझ सकता है। मानव जीवन के तीन अन्य अति महत्वपूर्ण पहलू, स्वतंत्रता, न्याय और अधिकार इस समानता से आवश्यक रूप में जुड़े हुए हैं। यह अंततः गांधीजी के रचनात्मक कार्यों के बल पर स्वराज्य–प्राप्ति के सर्वकालिक और अद्वितीय वैचारिक दृष्टिकोण का खुलासा करता है। सर्वोदय–सबका उत्थान इसके केंद्र में है। यह इसकी आत्मा है। यह, निस्संदेह, किसी भी प्रकार के जाति–वर्ग, रंग, समुदाय (सामाजिक अथवा धार्मिक), लिंग या आर्थिक स्थिति–आधारित भेदभाव के बिना सबके उत्थान और समृद्धि को, अर्थात् सच्चे मानवतावाद को समर्पित है। स्वयं महात्मा गांधी के शब्दों में: "मेरे विचार में खादी हिंदुस्तान की समस्त जनता की एकता की, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक है, और इसलिए (यह अंततः) भारत की वेशभूषा है... जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन और उनके (न्याय संगत और समुचित) वितरण का विकेंद्रीयकरण इसकी मूल भावना है। (रचनात्मक कार्यक्रम, अहमदाबाद, 1948 से उद्धृत)

भारत गांवों का देश है। वर्ष 2011 जनगणना आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का 68.84 प्रतिशत भाग, अर्थात् 83 करोड़ से भी अधिक लोग 6,49,481 ग्रामों में निवास करते हैं। गांधीजी के जीवनकाल में देश की स्वतंत्रता से पूर्व अथवा अंग्रेजों से स्वाधीनता के वर्ष 1947 में भी देश में ग्रामों की संख्या इससे कहीं अधिक थी।

ग्राम केवल देश के सामाजिक ताने–बाने का आधार ही नहीं, अपितु हिंदुस्तान की विकासोन्मुख एवं समन्वयकारी संस्कृति व उन सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षक हैं, जो देशवासियों को अनेकता से एकता के सूत्र में पिरोते हैं, तथा अति विशेष रूप में राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने में अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। ग्राम–आधारित उद्यम–प्रमुखतः कृषि तथा सहायक या अन्योन्याश्रित लघु उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में, कुल मिलाकर देश के संपूर्ण विकास में गांवों की महत्ता, जिसे महात्मा गांधी ने अपने सर्वोदय (सर्व–कल्याण) एवं स्वराज्य–संबंधी विचारों में प्रमुखता से उजागर करते हुए देशवासियों का तदनुसार पुरुषार्थ का आह्वान किया है, आज भी ज्यों–की–त्यों है। वह महत्ता वर्तमान में भी स्वयं

गांधीजी के जीवनकाल से लेशमात्र कम नहीं है।

खादी राष्ट्रीय गौरव को प्रकट करने वाला हाथ–कते सूत से हस्तनिर्मित वस्त्र है। अति साधारण शब्दों में, यह स्वयं देशवासियों द्वारा देश में ही अपने द्वारा पैदा की गई कपास से निर्मित वस्त्र है। वस्त्र, मनुष्य की पांच मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। मानव जीवन में वस्त्र की आवश्यकता एवं महत्ता से हम सभी भली–भांति परिचित हैं। इसी महत्ता को केंद्र में रखते हुए महात्मा गांधी ने खादी उत्पादन को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का एक अनिवार्य भाग बनाया। वर्ष 1920 में असहयोग और स्वदेशी आंदोलन का शंखनाद करते समय गांधीजी ने देशवासियों का सभी प्रकार की विदेश–निर्मित वस्तुओं, विशेष रूप से मिलों में मिलमालिकों के एकाधिकार में निर्मित होने वाले और अंग्रेजी सत्ता द्वारा भारतीयों को, उनकी प्रतिष्ठा पर आघात करते हुए तथा उनकी सम्पन्नता के मार्ग को अवरुद्ध करने वाली अपनी नीति का अनुसरण करते हुए, अत्यधिक महंगे दामों पर बेचे जाने वाले वस्त्रों के बहिष्कार का आह्वान किया।

गांधीजी के ऐसा करने का कारण अथवा उनके द्वारा ऐसा किए जाने के मूल में रहने वाली भावना ग्रामों एवं किसानों के देश हिन्दुस्तान के आम जन को अनिवार्यतः राष्ट्र की मुख्यधारा में लाना था। लोगों में जाग्रति उत्पन्न कर, उनके श्रम के संपूर्ण सदुपयोग से उनकी आत्मनिर्भरता के बल पर अर्थव्यवस्था में उनका समुचित स्थान सुनिश्चित करना था। किसान और उनके सहयोगी –गांवों में बसने वाले लगभग सभी लोग एक बड़ी सीमा तक, किसी–न–किसी रूप में एक–दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। उनकी परस्पर निर्भरता होती है। महात्मा गांधी ने, इसीलिए, इस ग्रामीण शक्ति–भारत की वास्तविक शक्ति की उसकी आत्मनिर्भरता के बल पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अति महत्वपूर्ण और वांछित भूमिका के निर्वहन की कामना की –'सर्वोदय' (सर्वोत्थान) से 'स्वराज्य' की परिकल्पना की।

इस प्रकार, खादी की बात केवल स्वदेशी हस्तनिर्मित वस्त्र तक ही सीमित नहीं है। इसके मूल में एक अति प्रभावकारी –सशक्त, व्यावहारिक और सर्वकल्याण को समर्पित दर्शन है, जो ग्राम–केंद्रित अर्थव्यवस्था के बल पर स्वराज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। यह राष्ट्र के अपने संसाधनों, जनता के श्रम के संपूर्ण, सकारात्मक व न्यायोचित सदुपयोग से देशवासियों के समय की मांग के अनुरूप संयुक्त प्रयासों द्वारा सर्वकल्याणकारी तथा भारत की परिस्थितियों के पूर्णतः अनुकूल मूलभूत परिवर्तन क्रांति का माध्यम है।

इस संदर्भ में स्वयं महात्मा गांधी अथवा उनके जीवनकाल में उन्हीं की प्रेरणा से उनके साथियों–सहयोगियों द्वारा किए गए सभी प्रयास, विशेषकर वर्ष 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यसमिति द्वारा बीस लाख चरखों के निर्माण और देशभर में उनके वितरण–संबंधी प्रस्ताव को पारित किया जाना, वर्ष 1923 में काकीनाड़ा कांग्रेस अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा अखिल भारतीय खादी मंडल की स्थापना होना और 22 सितंबर, 1925 को पटना में अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना अति महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कदम थे। यही नहीं, ग्रामसेवक समग्र ग्रामसेवाएं, ग्रामीण लघु अथवा कुटीर उद्योग विकास ग्रामोद्योग, पंचायती राज, सहकारी पशुपालन गोरक्षा एवं ऐसे ही अनेक अन्य रचनात्मक कार्य, गांधी मार्गीय कार्यक्रम अद्वितीय खादी–दर्शन को आगे बढ़ाने, उसे विस्तार दिए जाने के लिए ही थे।

संपूर्ण भारतवर्ष से लाखों जन गांधीजी के जीवनकाल में ही उनके इस दर्शन के साथ जुड़े। स्वदेशी की भावना से आत्मसात करते हुए (खादी स्वयं जिसकी जीती–जागती प्रतीक थी) इसे केंद्र में रखकर तदानुसार रचनात्मक कार्यक्रमों में, विशेषकर जिनका हमने अभी–अभी उल्लेख किया है, सक्रिय रूप से संलग्न होते हुए अपनी आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़े। साथ ही, उपनिवेशवादी सत्ता –विदेशी आधिपत्य से देश की मुक्ति हेतु संघर्ष में वे अपने को संलग्न कर सकें। वे महान और अद्वितीय विशिष्टताओं से भरपूर राष्ट्रीय संस्कृति और वस्त्र परंपरा के बल पर देश के पुनर्निर्माण के लिए प्रतिबद्धता के साथ आगे आए।

इस संपूर्ण घटनाक्रम से संबंधित पर्याप्त साहित्य और अभिलेख उपलब्ध हैं, जिनसे वास्तविकता को भली–भांति जांचा–परखा जा सकता है। वर्तमान पीढ़ी को खादी–दर्शन एवं महात्मा गांधी की परिकल्पना के ग्रामीण पुनर्निर्माण के उद्देश्य को उन्हीं के मार्ग प्राप्त करने की अभिलाषा को केंद्र में रखते हुए उस साहित्य एवं अभिलेखों का अध्ययन करना चाहिए। खादी–दर्शन के आधार पर गांधी–विचार एवं गांधी मार्ग की सर्वकालिक प्रासंगिकता और व्यावहारिकता को परखना चाहिए और इसे सार्थक –व्यावहारिक पाने की स्थिति में इससे प्रेरणा लेकर कार्य करने के लिए आगे आना चाहिए।

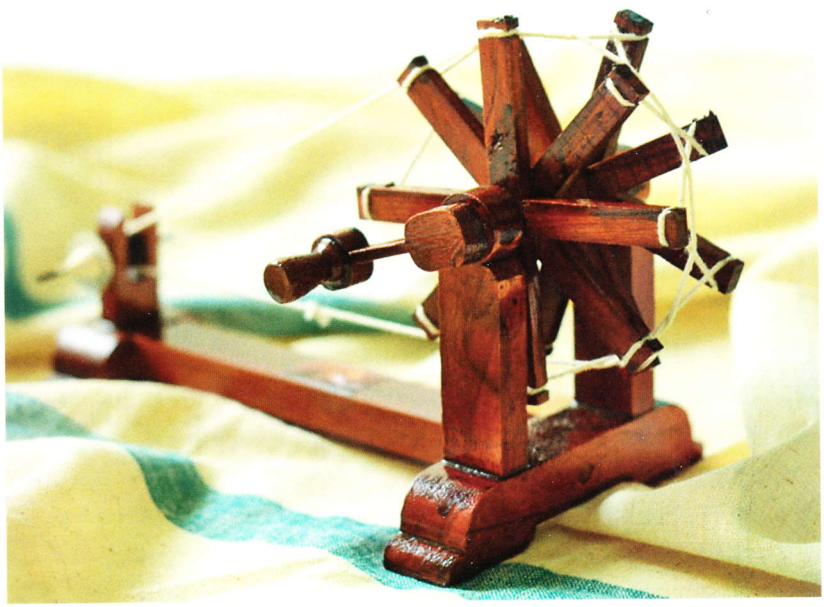

महात्मा गांधी का खादी–दर्शन, जैसाकि पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था आधारित है। यह भारत की आत्मा–ग्रामों को समर्पित है तथा उपलब्ध स्वदेशी साधनों एवं विशाल जनशक्ति के समुचित सदुपयोग द्वारा अहिंसा केंद्रित उच्चतम मानवीय मार्ग से मूल सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों व परम्पराओं के बल पर हिन्दुस्तान के पुनर्निर्माण को दृढ़ संकल्पित है। यह दर्शन–विचार पूर्णतः स्वदेशी है। भारतीय समाज, राष्ट्रीय ढांचे और व्यवस्था के अनुकूल है। यह, इसीलिए, समय और परिस्थितियों की मांग के अनुसार परिष्कृत रूप में अपनाए जाने की स्थिति में सर्वकालिक बन जाता है। कोई भी इस विचार की अनदेखी नहीं कर सकता। इसकी प्रासंगिकता को कम करके नहीं देख सकता।

यही कारण रहा कि हिंदुस्तान की अंग्रेजी दासता से मुक्ति के नौ वर्षोपरांत वर्ष 1956 में भारत सरकार द्वारा खादी और ग्रामोद्योग आयोग की एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापना की गई। खादी और ग्रामोद्योगों –कुटीर उद्योगों का गांधी मार्ग से विकास इसकी स्थापना का प्रमुख उद्देश्य था। दूसरे शब्दों में, इस आयोग का गठन महात्मा गांधी के खादी–दर्शन को स्वाधीन भारत में स्वयं देशवासियों द्वारा निर्वाचित सरकार के माध्यम से व्यावहारिक रूप देना था। सैंकड़ों वर्षों से ग्रामों में अस्तित्व में रहने वाले कुटीर उद्योग–धंधों की विद्यमान परिस्थितियों एवं समय की मांग के अनुरूप समुचित पुनर्विकास से देश की अर्थव्यवस्था की धुरी गांवों का उत्थान –देश का सच्चा पुनर्निर्माण इस आयोग का मूलादर्श रहा।

इस आयोग ने अपनी 62 वर्षों की यात्रा में, व्यवस्थागत अनेक दुर्बलताओं –कमियों के बावजूद, जिनकी चर्चा यहां करना प्रासंगिक नहीं है, अपने गठन के उद्देश्य की मूल भावना के अनुरूप अनेक कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से अच्छा कार्य किया है। यह एक सीमा तक संतोष की बात है कि आयोग ने अपनी योजनाओं और समय–समय पर प्रारंभ किए गए कार्यक्रमों के बल पर देश के सभी 29 प्रांतों एवं लगभग समस्त केंद्रशासित क्षेत्रों तक अपनी पहुंच बनाई है। खादी, जोकि आत्मनिर्भरता को समर्पित और ग्रामोद्धार को प्रतिबद्ध संपूर्ण दर्शन का आधार है, की गुणवत्ता में निरंतर सुधार और निखार आया है। समय और परिस्थितियों की मांग के अनुरूप –मौसम की आवश्यकता तथा सभी आयु वर्ग के लोगों, ग्रामीण व शहरीजन दोनों की पसंद के अनुसार खादी एवं अन्य वस्त्रों का उत्पादन भारतीयों को स्वदेशी की भावना की अनुभूति कराने और इस दर्शन की महत्ता को समझाने में बहुत कुछ सफल रहा है। यही नहीं, विदेशों में भी इसकी सुप्रसिद्धि का कार्य हो सका है।

लगभग पचास लाख लोग खादी और ग्रामोद्योग इकाइयों और संस्थानों में कार्य करते हुए सीधे रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। इससे भी अधिक संख्या में लोग आयोग द्वारा पोषित–आर्थिक सहायता प्राप्त विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों से, जिनका विवरण उपलब्ध है, अप्रत्यक्ष रूप में लाभान्वित हो रहे हैं। वे सम्मानपूर्वक अपनी रोजी–रोटी कमा रहे हैं। वर्तमान में, वर्ष 2016 के आंकड़ों के अनुसार देशभर में खादी और ग्रामोद्योग आयोग पोषित अथवा सहायता प्राप्त कुल 3,91,344 उद्योग कार्यरत हैं।

लेकिन इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना अपेक्षित है। ग्रामोत्थान ही हिंदुस्तान की सच्ची उन्नति की कसौटी है। खादी–दर्शन की मूल भावना से साक्षात्कार करते हुए ग्रामों की अधिकतम आत्मनिर्भरता के लिए और ठोस प्रयास आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। इस संबंध में प्रयास कार्य केवल सरकारी स्तर अथवा सहायता से ही नहीं, अपितु स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से मस्तिष्क में गहराई के साथ यह सत्यता बैठाकर वांछित है कि स्वदेशी से स्वराज्य का मार्ग ग्रामों से ही होकर गुजरता है। खादी राष्ट्रीय अस्मिता, गौरव और समृद्धि की जीती–जागती प्रतीक रही है। यह भारतीय मार्ग की अभी तक भी पहचान है। इसलिए, मैं विशेष रूप से देश के युवा वर्ग का आह्वान करूंगा कि वह आगे आएं। खादी को अपनाएं। खादी–दर्शन के व्यापक प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दें। खादी कार्यक्रमों और योजनाओं के साथ इस सत्यता से साक्षात्कार करते हुए जुड़े कि खादी और खादी–दर्शन हमारी अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता का एक सुदृढ़ एवं अति महत्वपूर्ण स्तंभ है।

(लेखक सुप्रसिद्ध भारतीय शिक्षाशास्त्री हैं एवं चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश) के कुलपति रह चुके हैं। इन्हें पदमश्री और सरदार पटेल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।)

ई–मेल : ravindrakumar5@hotmail.com